ईश्वरीय ज्ञान का सार

राजा योग

राजा योग अर्थात योग जिससे राजा बनते हैं। अनेक जन्मों से गुजरने के बाद मनुष्य आत्माएं देहभान और शारीरिक योग में फंस गयी हैं। फिर भी शारीरिक कसरत, व्रत, पूजा, अंधे विश्वास के द्वारा अखण्ड सुख शान्ति की प्राप्ति नहीं हो सकती। सच्चा सुख शान्ति प्राप्त करने के लिए अर्थात जीवन मुक्ति के स्टेज तक पहुँचने के लिए सच्चे 'स्व' को जानने की आवश्यकता है। इसका मतलब है कि आत्मा अभिमानी बनना है। अपने को आत्मा के रूप में देखना है जो राजा की तरह अपने शरीर का नियन्त्रण करती है न कि गुलाम जैसे उसकी सेवा करती है।

परमपिता शिव उस स्टेज को प्राप्त करने के लिए मनुष्य आत्माओं को सच्चा राजा योग अर्थात भगवान की <u>याद का सहज अभ्यास</u> सिखाते हैं। याद सहज स्वभाविक और निरन्तर हो सकती है जब कि मनुष्य के द्वारा सिखाये योग में मेहनत लगता है। परमपिता शिव शरीर में रहते हुए भी सदेव निराकारी स्टेज में हैं। मतलब उनका भान देह से परे है। इसिलए वे हर प्रकार केप्रभाव से परे हैं। जब हम यह अनुभव करें कि हम अविनाशी आत्माएं हैं न कि ५ तत्वों से बने हुए शरीर, तब हम निराकारी स्टेज को पकड़ेंगे और अखण्ड सुख शान्ति में रहेंगे।

परमपिता परमात्मा शिव ही राजा योग सिखाने के अधिकारी हैं। 'राजा योग' सिखाने का और किसीका अधिकार नहीं। कोई मनुष्य यह नहीं कह सकता कि मैं दूसरों को राजा योगसिखाऊंगा। मनुष्य के गुरुओं का राजा योग के कोर्स कराना शिवबाबा की श्रीमत का उल्लंघन है।

नयी दुनिया के लिए नया ज्ञान

बेसिक ज्ञान

आत्मा, परमात्मा, सृष्टि आदि के बारे में ज्ञान जो बड़ी माँ के पार्ट को बजनेनावाले परमपिता शिव मुर्लियों के रूप में १९४७-१९६९ तक ब्रह्मा बाबा (दादा लेखराज) सूना रहे थे।

अड्वान्स ज्ञान

यह ईस्वरिया ज्ञान का गहरा अर्थ है जो १९७६ से प्रजापिता (सब मनुष्यों का पिता) के तन के द्वारा बाप शिक्षक सदगुरु का पार्ट बजाते हुए शिव बाप सूना रहे हैं। इस ज्ञान को पढ़ती हुई मनुष्य आत्मा समझ सकती है कि सृष्टि के माता-पिता कौन हैं, ब्रह्मा शंकर विष्णु के पार्ट कौन और किस के द्वारा बजाते हैं आदि। चक्र में अपने सब जन्मों को भी जन सकती है।

आध्यात्मिक ईश्वरीय विश्वविद्यालय

१ ए ३५१ – ३५२ विजयविहार, पो. रिठाला, रोहिणी
से. ५ के पास, दिल्ली ११० ०८५
फ़ोन : 011-27044227, 098913700107
a1spiritual@sify.com, inforpoint@gmail.com

शिवबाबा – बाप शिक्षक सदगुरु

मनुष्य के तीन बाप होते हैं | पहला बाप सब आत्माओं का बाप अर्थात परमपिता शिव है | दूसरा है प्रजापिता जो साकार मनुष्य सृष्टि का पिता है | तीसरा है इस जन्म का बाप |

परमपिता परमात्मा शिव १९३६ – २०३६ के बीच अर्थात संगम युग में साधारण मनुष्य के तन में आकर सारी दुनिया को यह ज्ञान सूना रहे हैं |

आत्मा

शरीर अलग है, मनुष्य आत्मा अलग है | दोनों के मेल को जीवात्मा अथवा मनुष्य कहा जाता है | जीवात्मा शरीर को चलानेवाली अदृश्य शक्ति है | आत्मा और शारीर अलग-अलग होकर कुछ भी नहीं कर सकते | आत्मा अति सूक्ष्म शक्ति का बिंदु है, जिसको चेतन्य अणु कहा जा सकता है | यह चेतन्य ज्योतिर्बिंदु है, जिसकी तीन शक्तियाँ हैं : मन, बुद्धि और अनेक जन्मों के संस्कार | आत्मा जन्म-मरण के चक्र में आती है | हर कल्प में ज्यादा से ज्यादा ८४ और कम से कम १ जन्म ले सकती है | जब परमधाम से इस सृष्टि में आती है, तब अभिनेते की तरह अपने पार्ट बजाना शुरू करती है | तब से दूसरी आत्माओं के प्रभाव में आकर और उन पर अपना प्रभाव डालकर अच्छे-बुरे कर्मों के हिसाब-किताब तैयार करती है | अनेक जन्मों से गुज़रते-गुज़रते धीरे-धीरे कमज़ोर बनती है | उसका मन और बुद्धि पत्थर जैसे बन जाते हैं |

परमात्मा

वह सब आत्माओं का पिता है | आत्माओं की तरह वह भी अदृश्य शक्ति का बिंदु है, परन्तु उनसे और सूक्ष्म है | उसका नाम शिव अर्थात कल्याणकारी है | वह हर प्रकार के प्रभाव से सदेब परे है, सदेव निराकारी, कर्म और भोग से परे है | वह एक ही है जो मनुष्य सृष्टि का आदि मध्य अंत को जानता है | सृष्टि के हर चक्र के अंत में आकर मनुष्यों को सच्चा ज्ञान देता है | वह एक ही है जो जन्म-मरण के चक्र में न आने के कारण सदेव पवित्र है, इसीलिए वही आत्माओं और ५ तत्वों को पावन बनाकर आदि के सतोप्रधन के स्टेज में पहुँचाता है | परमपिता शिव के मनुष्य सृष्टि में तीन कार्य हैं : नयी दुनिया की स्थापना, पुरानी दुनिया का विनाश और नयी रचना की पालना | उसका अपना शरीर न होने के कारण उसको मनुष्य तन में आधार लेना पड़ता है | संगम युग पर ही जब वह साकारी सृष्टि में आता है, तीन कार्य संपन्न करने वह तीन मनुष्य आत्माओं के शरीरों के आधार लेता है | वे हैं क्रमशः ब्रह्मा, शंकर, विष्णु |

परमधाम

पृथ्वी ब्रह्माण्ड का मध्य है, जहाँ हर कल्प में स्वर्ग और नरक बनते हैं | दुसरे शब्दों में यह मनुष्य सृष्टि या ५ तत्वों की दुनिया अथवा रंगमंच है, जिस पर मनुष्य नाटक चलता है | साकारी श्रृष्टि से परे सूक्ष्म वतन अर्थात संकल्पों से रचा हुआ वतन है, जो साकारी हद से परे है | साकारी और आकारी सृष्टि से परे परमधाम है | परमधाम अर्थात ऊँचे ते ऊँचा धाम अथवा आत्माओं की दुनिया है, जहाँ ५ तत्त्व नहीं होते | आत्माएं और परमात्मा साकारी सृष्टि में आने से पहले वहाँ रहते हैं | परमपिता परमात्मा प्राय: कल्पभर वहाँ रहता है | वह सिर्फ संगम युग में अर्थात एक चक्र के अंत दुसरे चक्र के आदि के बीच जो तीव्र परिवर्तन का समय है, यहाँ पृथ्वी पर आता है |

सृष्टि का चक्र

इतिहास एक नाटक है, जिसमें आत्मा रूपी अभिनेता अपने शरीररूपी वस्त्र के द्वारा पृथ्वीरूपी रंगमंच पर पार्ट बजाती हैं | यह नाटक चक्र में बंधा हुआ है, जिसमें घड़ी की तरह अंत सीधे ही शुरुआत में परिवर्तित हो जाता है | इसके ४ सामान आयु के युग होते हैं : सतयुग (आत्मा और ५ तत्वों की अति पवित्रता व शक्ति का समय; अति सुख शान्ति का समय), त्रेतायुग, द्वापरयुग, कलियुग (जब आत्मा और ५ तत्त्व अति अपवित्र और कमज़ोर बन जाते हैं; अज्ञानता, दुःख, आशान्ति का समय) | सदेव घूमते हुए चक्र के सामान ये ४ युग क्रमशः एक के बाद दूसरा आते रहते हैं |

अभी के परिवर्तन का समय

हर चक्र का अंतिम १०० साल संगम युग है, जो परिबर्तन का समय है | यह दो चक्रों के बीच का समय है, अर्थात पूरे पतन के समय और सच्ची जीवान मुक्ति के समय को जोड़ने वाला युग | मनुष्य आत्माएं इसी समय ही अपने आत्मिन पिता से मिलकर अपने बारे में, भगवान के बारे में, सृष्टि के बारे में सच्चाई को जन सकती हैं | वे सृष्टिकी रचना और विनाश के रहस्य और आदि मध्य अंत को समझ सकती हैं |